214

B.A. (Part – I) Examination, 2022

(Three -Year Scheme)

(10+2+3)

(Faculty of Arts)

हिन्दी साहित्य

Paper-II

(उपन्यास, कहानी एवं गद्य की अन्य विधाएँ)

Time : **3 Hours**

Maximum Marks : **100**

Minimum Pass Marks : **36**

Note : (1) Answer of all the questions (Short answer as well as descriptive) are to be given in the main answer-book only. Answer of short answer type questions must be given in sequential order. Similarly all the parts of one question of descriptive part should be answered at one place in the answer-book. One complete question should not be answered at different places in the answer-book.

सभी (लघूत्तरात्मक तथा वर्णनात्मक) प्रश्नों के उत्तर मुख्य उत्तर पुस्तिका में ही लिखें । लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर प्रश्नों के क्रमानुसार ही दीजिये । इसी प्रकार किसी भी एक वर्णनात्मक प्रश्न के अन्तर्गत पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के उत्तर उत्तर-पुस्तिका में अलग-अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर क्रमानुसार हल करें ।

(2) No supplementary answer-book will be given to any candidate. Hence the candidates should write the answer precisely in the main answer book only.

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर-पुस्तिका नहीं दी जायेगी । अतः परीक्षार्थियों को चाहिये कि वे मुख्य उत्तर-पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखें ।

https://www.pdusuonline.com

1. निम्नांकित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) मन न इस बात को मानता है, न उस बात को। सही-गलत की बात भी वह नहीं जानती, जानना भी नहीं चाहती। इस समय इतना ही काफ़ी है कि जीवन में जितना भरा-पूरा वह इन दिनों महसूस कर रही है, उसने कभी नहीं किया। बल्कि आज अगर उसे किसी बात का अफ़सोस है तो केवल इसी बात का कि यह निर्णय उसने बहुत पहले क्यों नहीं ले लिया ? क्यों नहीं वह बहुत पहले ही इस दिशा की ओर मुड़ गई ? किस उम्मीद के सहारे वह सात साल तक यों घिसटती रही ? सात साल का वह जीवन मात्र घिसटना ही तो था; घिसटना और तिल-तिल करके टूटना। एक पुरुष का साथ ज़िन्दगी को यों भरा-पूरा बना जाता है, यह तो उसने कभी सोचा ही नहीं था। 10

अथवा

अपने घर से उखड़कर बंटी जैसे सभी जगह से उखड़ गया, क्लास में बैठा रहता है तो मन में घर तैरता रहता है – ममी, अमि, ममी का कमरा, कमरे का जादू.....और भी जाने क्या-क्या। सबके बीच होकर भी जैसे वह सबसे कटा-छँटा, अलग-थलग सबको देखता रहता है। और जब घर में होता है तो आँखों के आगे कभी स्कूल तैरता रहता है तो कभी अपना पुराना घर, अपना बगीचा, बगीचे का एक-एक पौधा और पौधे की एक-एक पत्ती, फूफी, माली दादा, ममी- वहाँवाली ममी।

(ख) हल्कू ने हाथ निकालकर जबरा की ठंडी पीठ सहलाते हुए कहा – कल से मत आना मेरे साथ, नहीं तो ठंडे हो जाओगे। यह राँड पछुआ न जाने कहाँ से बरफ लिए आ रही है। उठूँ फिर एक चिलम भरूँ। किसी तरह रात तो कटे ! आठ चिलम तो पी चुका। यह खेती का मजा है ! और एक-एक भगवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाए तो गर्मी से घरबाकर भागे। मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ – कम्मल। मजाल है कि जाड़े का गुजर हो जाए। तकदीर की बखूबी है। मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटें। 10

अथवा

मैं कुछ बोला नहीं। मेरा मन जाने कैसे गम्भीर प्रेम भाव से आशुतोष के प्रति उमड़ रहा था। मुझे ऐसा मालूम होता था कि ठीक इस समय आशुतोष को हमें अपनी सहानुभूति से वंचित नहीं करना चाहिए। बल्कि कुछ अतिरिक्त स्नेह इस समय बालक को मिलना चाहिए। मुझे यह एक भारी दुर्घटना मालूम होती थी। मालूम होता था कि अगर आशुतोष ने चोरी की है तो उसका इतना दोष नहीं है; बल्कि यह हमारे ऊपर बड़ा भारी इल्जाम है। बच्चे में चोरी की आदत भयावह हो सकती है, लेकिन बच्चे के लिए वैसी लाचारी उपस्थित हो आई, यह और भी कहीं भयावह है। यह हमारी आलोचना है।

https://www.pdusuonline.com

(ग) मैंने उसकी दशा देखकर कई बार क्रोध वश सोचा कि यह कमबख्त एक ही मुहल्ले से क्यों चिपका हुआ है ? घुम-घूमकर शहर में भीख क्यों नहीं माँगता ? मुझे कभी-कभी लगता है कि वह किसी का मुहताज न होना चाहता था और इसके लिए उसने कोशिश की भी जिसमें वह असफल रहा । चूँकि वह मरना न चाहता था, इसलिए जोंक की तरह जिन्दगी से चिपटा रहा । लेकिन लगता है, जिन्दगी स्वयं जोंक सरीखी उससे चिपटी थी और धीरे-धीरे उसके रक्त की अन्तिम बूँद तक पी गयी । 10

अथवा

"कभी-कभी मैं सोचता हूँ मिस लतिका, किसी चीज को न जानना यदि गलत है, तो जान-बूझकर न भूल पाना, हमेशा जोंक की तरह उससे चिपटे रहना – यह भी गलत है । बर्मा से आते हुए मेरी पत्नी की मृत्यु हुई थी, मुझे अपनी जिन्दगी बेकार-सी लगी थी । आज इस बात को अरसा गुजर गया और जैसा आप देखती हैं, मैं जी रहा हूँ, उम्मीद है कि काफी अरसा और जीऊँगा । जिन्दगी काफी दिलचस्प लगती है, और यदि उम्र की मजबूरी न होती तो शायद मैं दूसरी शादी करने में भी न हिचकता । इसके बावजूद कौन कह सकता है कि मैं अपनी पत्नी से प्रेम नहीं करता था – आज भी करता हूँ ।

(घ) दासता ने हमें कितना कृत्रिम बना दिया था । उसका परिणाम अभी हमें बहुत दिनों तक भोगना पड़ेगा । जब मुझे कविता-पाठ करने के लिए बुलाया गया तो मैंने हिन्दी में बोलना शुरू किया । मैंने कहा, भारत के संविधान में हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा मान ली गई है । पर अभी न तो हमारे मन में हिन्दी के लिए उत्साह है और न हमने उसे सीखने का प्रयत्न किया है । मैं तो सही अंग्रेजी बोलने के बजाय इसे ज्यादा पसन्द करूँगा कि आप कोशिश करके – टूटी-फूटी हिन्दी ही बोलें । 10

अथवा

जमाना बदला । मैं अब शहरों में ही ज्यादातर रहता । और शहर आए दिन हिन्दू-मुस्लिम दंगों के अखाड़े बन जाते थे । हाँ, आए दिन ! देखिएगा, एक ही सड़क पर हिन्दू-मुसलमान चल रहे हैं, एक ही दूकान पर खरीद रहे हैं, एक ही सवारियों पर जानू-ब-जानू आ-जा रहे हैं, एक ही स्कूल में पढ़ रहे हैं, एक ही दफ्तर में काम कर रहे हैं कि अचानक सबके सिर पर शैतान सवार हो गया । हल्ला, भगदड़, मारपीट, खूनखराबा, आग लगी – सारी खुराफातों की छूट । न घर महफूज, न शरीर, न इज्जत । प्रेम, भाईचारे और सहृदयता के स्थान पर घृणा, विरोधी और नृशंस हत्या का उलंग नृत्य ।

2. " 'आपका बंटी' उपन्यास में मध्यमवर्गीय परिवार में संबन्ध विच्छेद की स्थिति एक बच्चे की दुनिया का भयावह दुःस्वप्न बन जाती है ।" सोदाहरण स्पष्ट कीजिये । 15

अथवा

बंटी का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

https://www.pdusuonline.com

3. 'पूस की रात' कहानी की तात्त्विक समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

'जिन्दगी और जोंक' कहानी के मुख्य पात्र रजुआ की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

4. 'बसन्त का अग्रदूत' संस्मरण में व्यक्त विचारों को स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'सुभान खाँ' रेखाचित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : $7\frac{1}{2} + 7\frac{1}{2} = 15$

(क) हिन्दी उपन्यास का उद्भव एवं विकास

(ख) रेखाचित्र एवं संस्मरण परिचय एवं अन्तर

(ग) कहानी के प्रमुख तत्त्व

(घ) प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उपन्यास

https://www.pdusuonline.com
Whatsapp @ 9300930012
Send your old paper & get 10/-
अपने पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से

https://www.pdusuonline.com